चतुर्थः पाठः - जननी तुल्यवत्सला (कथा)

1. पाठ परिचय

यह कथा महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित **'महाभारत' के वनपर्व** से ली गई है। इस कथा का मुख्य संदेश यह है कि माता का प्रेम अपने सभी बच्चों के लिए समान (तुल्य) होता है, लेकिन जो बच्चा कमज़ोर और लाचार होता है, उस पर माता का प्रेम स्वाभाविक रूप से अधिक उमड़ पड़ता है।

2. कथा का विस्तृत सार

एक किसान खेत में दो बैलों से हल जोत रहा था। उनमें से एक बैल कमज़ोर था और हल खींचने में असमर्थ था। किसान उस कमज़ोर बैल को बहुत मार रहा था। बैल कमज़ोर होने के कारण ज़मीन पर गिर पड़ा। किसान उसे बार-बार उठाने की कोशिश कर रहा था और पीट रहा था।

माता सुरभि का दुःख: यह दृश्य देखकर गायों की माता 'सुरभि' की आँखों से आँसू बहने लगे। स्वर्ग के राजा इन्द्र (शक्र) ने सुरभि से पूछा, "हे कल्याणी! तुम क्यों रो रही हो?" सुरभि ने उत्तर दिया कि "मैं अपने उस दीन-हीन पुत्र (कमज़ोर बैल) को देखकर रो रही हूँ, जिसे किसान जानकर भी पीट रहा है।"

तुल्यवत्सला जननी: इन्द्र ने कहा, "तुम्हारे तो हज़ारों पुत्र हैं, फिर इसी पर इतना प्रेम क्यों?" सुरभि ने एक बहुत ही मार्मिक श्लोक कहा: *"यदि पुत्रसहस्रं मे सर्वत्र सममेव मे। दीनस्य तु सतः शक्र पुत्रस्याभ्यधिका कृपा॥"* (हे इन्द्र! मेरे हज़ारों पुत्र हैं और सब पर मेरा समान प्रेम है। लेकिन जो कमज़ोर और दुखी होता है, उस पर माता की कृपा और प्रेम कुछ अधिक ही होता है)।

इन्द्र की कृपा: माता सुरभि की बातें सुनकर इन्द्र का हृदय भी पिघल गया। उन्होंने तुरंत बहुत तेज़ हवाओं और बादलों की गर्जना के साथ भारी बारिश (प्रवर्ष) कर दी। बारिश के कारण खेत में पानी भर गया और किसान बैलों को लेकर खुशी-खुशी घर लौट गया। इस प्रकार उस कमज़ोर बैल की जान बच गई।